प्रातः क्लास 1/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठा–मीठा बेहद का बाप मीठे2 बच्चों को बैठ समझाते हैं। यह तो समझते हो ना बहुत मीठा2 बाप है। फिर शिक्षा देने वाला भी बहुत मीठा2 है। यहाँ तुम जब बैठते हो तो यह याद होना चाहिए। बहुत मीठा2 बाबा है। उनसे स्वर्ग का वरसा मिलना है। यहाँ हम वैश्यालय में बैठे हैं। कितना मीठा बाप है। वह खुशी दिल में होनी चाहिए। बाबा हमको आधा कल्प सुखधाम में ले जाने वाला है। दुख हरने वाला है। एक तो ऐसा बाबा है फिर यह बाबा टीचर भी बनते हैं। हमको सृष्टि चक्र का राज़ समझाते हैं। और कोई नहीं समझा सकते हैं। यह चक्र कैसे फिरता है, 84 जन्म कैसे पास होते हैं, यह सारा राज़ चपटी में समझाते हैं। फिर साथ में भी ले जावेंगे। यहाँ तो रहना नहीं है। सभी आत्माओं को साथ ले जावेंगे। बाकी थोड़े रोज़ है। कहा जाता है बहुत गई थोड़ी रही। बाकी थोड़ा समय है इसलिए जल्दी2 मुझे याद करो तो तुम्हारे जन्म जन्मांतर के पापों का बोझा खलास हो जावेंगे। भल माया की युद्ध चलती है। तुम मुझे याद करेंगे तो वह भी करने से हटावेगी। यह भी बाबा बता देते हैं। इसलिए कब विचार न करना कितने भी संकल्प विकल्प तूफान आयें, सारी रात संकल्पों में नींद फिट जाये तो भी डरना न है। बहादुर रहना है। बाबा कह देते हैं यह आवेंगे जरूर। स्वप्न भी आवेंगे। इन सभी बातों में डरना न है। युद्ध का मैदान है ना। यह सभी विनाश हो जानी है। तुम युद्ध करते हो माया को जीतने के लिए। बाकी इसमें कोई श्वाँस आदि नहीं बन्द करना है। श्वास तो आत्मा में होता ही है। श्वास कोई शरीर में नहीं होता। आत्मा जब शरीर में आती है तब श्वास पड़ता है। तो इसमें श्वास आदि बन्द करने की भी कोशिश नहीं करनी चाहिए। हठयोग आदि में कितने तकलीफें आदि सहन करते हैं। बाबा को अनुभव है। थोड़ा2 सीखते थे; परन्तु फुर्सत भी हो ना। जैसे आजकल तुमको कहते हैं ज्ञान तो अच्छा है; परन्तु फुर्सत कहाँ। इतने कारखाने हैं यह हैं। तुमको बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों एक तो बाप को याद करो और यह चक्र याद करो। बस। यह डिफीकल्ट है। चक्र फिरता ही रहता है। सतयुग त्रेता में इन्हों का राज्य था। फिर इस्लामी, बौद्धी आदि आये वृद्धि होती गई। वह अपने धर्म को भूल गये। अपन को देवी देवता कह न सके; क्योंकि अपवित्र बन पड़े हैं। देवताएँ तो पवित्र थे। ड्रामा के प्लैन अनुसार फिर हिन्दु कहलाने लग पड़ते। वास्तव में हिन्दूधर्म तो है नहीं। हिन्दुस्तान नाम भी बाद में पड़ा है। असल नाम तो भारत ही है। कहते भी हैं भारत माताओं की जय। हिन्दुस्तान की माताएँ थोड़े ही कहते हैं। भारत में ही राज्य था इन्हों का। भारत की ही महिमा करते हैं। तो बाप बच्चों को सिखला रहे हैं बाप को कैसे याद करना चाहिए। बाप आये ही हैं घर ले चलने के लिए। किसको? आत्माओं को। तुम जितना बाप को याद करते हो तुम उतना ही पवित्र होते जाते हो। पवित्र बन जावेंगे तो फिर कोई सजा नहीं खावेंगे। अगर सजा खाई तो पद कम हो जावेगा। इसलिए जितना याद करेंगे उतना ही विकर्म विनाश होते रहेंगे। बहुत बच्चे हैं जो याद नहीं कर सकते हैं। तंग होकर छोड़ देते हैं। युद्ध करते नहीं हैं। ऐसे भी हैं। समझा जाता है राजधानी स्थापन होनी है। नापास भी तो बहुत होंगे। गरीब प्रजा भी चाहिए ना। भल वहाँ दुख नहीं होता है; परन्तु साहुकार तो हर हालत में होंगे ना। यह है कलियुग। इनमें साहुकार गरीब दोनों ही दुख भोगते हैं। वहाँ गरीब साहुकार दोनों ही सुखी रहते हैं। परन्तु गरीब साहुकार की भासना तो रहेगी ना। दुख का नाम नहीं होगा। बाकी नम्बरवार तो होते ही हैं। राजाओं की दास–दासियाँ साहुकारों की दास–दासियाँ तो चाहिए ना; परन्तु बड़े ही सुखी रहते हैं। कोई रोग नहीं, आयु भी बड़ी होती है। इस दुखधाम को बिल्कुल भूल जाते हैं। सतयुग में तुमको दुख याद भी नहीं होगा। दुखधाम और सुखधाम के याद अभी बाप दिलाते हैं। मनुष्य कहते हैं स्वर्ग था; परन्तु कब था कैसे था यह कुछ भी नहीं जानते। लाखों वर्ष का बात तो कोई को याद भी न आ सके। बाप कहते हैं कल तुमको सुख था फिर कल होगा। तो यहाँ बाप बैठ फूलों को देखते हैं। यह अच्छा फूल है, यह इस प्रकार की मेहनत करते हैं। यह स्थीरियम नहीं होता है। यह पत्थर बुद्धि है। बाप को कोई बात की चिन्ता नहीं रहती। हाँ समझते हैं बच्चे जल्दी पढ़कर होशियार हो जायें। पढ़ाना भी है। बच्चे तो बने हैं; परन्तु जल्दी पढ़कर होशियार हो और पढ़ावे भी। यह कहाँ

तक पढ़ते हैं, पढ़ाते हैं, कैसे फूल हैं। यह बाप बैठ देखते हैं; क्योंकि यह है चैतन्य फूलों का बगीचा। फूलों को देखते भी कितनी खुशी होती है। बच्चे खुद भी समझते हैं बाबा स्वर्ग का वरसा देते हैं। बाप को याद करते रहेंगे तो पाप कटते रहेंगे। नहीं तो सजा खाकर फिर थोड़ा पद पावेंगे। इसको कहा जाता है मानी और मोचरा। बाप को ऐसे याद करो जो जन्म–जन्मान्तर के पाप कट जायें। चक्र को जानना भी बिल्कुल सहज है। यह चक्र तो फिरता ही रहता है। कब बन्द नहीं होता। जूँ मिसल चलता रहता है। जूँ सभी से आस्ते चलती है। यह बेहद का ड्रामा भी बहुत आस्ते चलता है। टिक2 होती रहती है। बच्चों ने 5000 वर्ष में सेकण्ड मिनट कितने होते हैं वह हिसाब भी निकाल कर भेजा है ना। लाखों वर्ष की बात होती तो कोई हिसाब भी निकाल न सके। समय गुजरते2 अभी यहाँ तक आकर पहुँचा है। है ही 5000 वर्ष का चक्र। यहाँ बाप और तुम बच्चे बैठे हो। बाबा एक एक को देखते हैं यहाँ बैठकर। यह बाप को कितना याद करते हैं। कितना ज्ञान उठाया है। औरों को कितना समझाते हैं। है बहुत सहज। सिर्फ बाप का परिचय दो। बैज तो बच्चों पास है ही। बोलो यह है शिवबाबा। शिवबाबा को तो सभी याद करते ही हैं। काशी में जाओ तो भी शिवबाबा शिवबाबा। रड़ी मारते रहते हैं। तुम हो सालीग्राम। आत्मा बिल्कुल छोटी सितारा है। उनमें कितना पार्ट भरा हुआ है। आत्मा शरीर में प्रवेश कर पार्ट बजाती है। आत्मा बढ़ती घटती नहीं हैं। विनाश नहीं होती। आत्मा तो अविनाशी है। उनमें ड्रामा का पार्ट भरा हुआ है। जो कभी भी घिसता नहीं। दूसरी आत्मा होती नहीं। आत्मा में भी अविनाशी पार्ट भरा हुआ है यह भी तुम बच्चे ही समझते हो। इस दुनिया में कोई ऐसा मनुष्य नहीं जिसको हम बाप, टीचर, सद्गुरु कहें। यह एक ही बेहद का बाप है सो ही बेहद का टीचर भी है। सभी को शिक्षा देते हैं। मन्मना तुमको भी कहते हैं कोई भी धर्म वाला मिले उनको कहो अल्ला को तो सभी याद करते हैं ना। आत्माएँ सभी भाई हैं। अभी बाप शिक्षा देते हैं मामेकम याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। बाप ही पतित पावन है। यह कि(सने) कहा? आत्मा ने। मनुष्य भल गाते हैं परन्तु अर्थ नहीं समझते हैं। तुम सब भक्तियाँ सीताएँ हैं। हम हैं राम। सब भक्तियों का सद्गति दाता मैं हूँ। सर्व की सद्गति कर देता हूँ। सब मुक्तिधाम में चले जाते हैं। सतयुग में दूसरा कोई धर्म होता नहीं। सिर्फ हम ही होते हैं। क्योंकि हम ही बाप से वरसा लेते हैं। यहाँ तो देखो कितने ढेर के ढेर मंदिर हैं। कितनी बड़ी दुनिया है। क्या2 चीज़े हैं। वहाँ यह कुछ भी नहीं होता। सिर्फ भारत ही होगा। यह रेल आदि भी नहीं होगी। यह सब खत्म हो जावेगी। वहाँ रेल की दरकार ही नहीं रहती। छोटे शहर होंगे ना। रेल तो चाहिए दूर2 गांव में जाने के लिए। वहाँ तो बिल्कुल छोटे झाड़ होंगे। इसलिए रेले आदि सब बाद में बनती हैं। तुम बच्चे यहाँ आते हो रिफ्रेश होने लिए। बाबा रिफ्रेश कर रहे हैं ना। भिन्न2 प्वाइंट्स समझाते रहते हैं बच्चों के लिए। यहाँ बैठे हो बुद्धि में सारा ज्ञान भरा हुआ है। जैसे परमपिता परमात्मा है उनमें सारा ज्ञान भरा हुआ है। जो भी तुमको सुनाते रहते हैं। वह है ऊँच ते ऊँच शान्तिधाम में रहने वाले। हम आत्मा भी सब वहाँ स्वीटहोम में रहने वाली हैं। शान्ति के लिए मनुष्य कितना माथा मारते हैं। साधु लोग भी कहते हैं मन को शान्ति कैसे हो। क्या2 बकते रहते हैं। गाया जाता है आत्मा तो मन बुद्धि सहित है। इनका स्वधर्म ही है शांत। मुख ही नहीं कर्मइन्द्रिय नहीं तो जरूर शांत होंगे ना। तुम समझते हो हम आत्माओं का निवास स्थान है स्वीटहोम। जहाँ बिल्कुल शांति रहती है। फिर वहाँ से पहले2 आते हैं सुखधाम में। अब तुम इस दुखधाम से ट्रान्सफर होते हो सुखधाम में। बाप पावन बना रहे हैं। कितनी बड़ी दुनिया है। कितने जंगल आदि कुछ भी वहाँ नहीं होते। इतने फल फूल आदि कुछ नहीं होंगे। इतनी पहाड़िया नेपाल शहर आदि कुछ नहीं होंगे। जैसे छोटा सा माडल स्वर्ग का बनाते हैं। वैसे छोट सा स्वर्ग होगा। हमारी ही राजधानी हो क्या होना है वन्डर देखो। कितनी बड़ी सृष्टि है। यहाँ तो सभी आपस में लड़ते रहते हैं। फिर इतनी सारी दुनिया खत्म हो जावेगी। बाकी हमारा ही राज्य रहेगा। इतना सभी कुछ खत्म हो यह कहाँ जायेगा। समुद्र

धरती आदि में अन्दर चला जायेगा। इनका नाम निशान नहीं रहेगा। समुद्र में जो चीज़ जाती है वह अन्दर ही खत्म हो जाती है। सागर हप कर लेता है। तत्व तत्व में मिट्टी में मिल जाती है। इसको ही कहा जाता है नई सतोप्रधान प्रकृति। दुनिया भी सतोप्रधान होगी। तुम्हारी वहाँ नेचरल ब्युटी रहती है। वहाँ लिप्सटिक आदि कुछ नहीं लगाते। इनको कहा जाता है नैचरल ब्युटी। तो तुम बच्चों को खुशी होनी चाहिए। स्वर्ग के परिजाद बनते हो। रंगून में कहते हैं एक छमछप तालाब है जिसमें स्नान करने से परी बन जाते हैं। वास्तव में है सारी ज्ञान की बातें। ज्ञान स्नान करने से तुम स्वर्ग के परिजादे बन जाते हो। ज्ञान स्नान नहीं करेंगे तो तुम देवता नहीं बनेंगे। और कोई उपाय है भी नहीं। बाप तो है सदा खूबसूरत। तुम आत्माएँ सांवरी बन गई हो। तुम्हारा माशुक तो बड़ा ही सुन्दर है। वह सुन्दर माशुक आकर तुम बच्चों को सुन्दर बनाते हैं। बाप कहते हैं मैंने इसमें प्रवेश किया है। मैं ने कब सांवरा नहीं बनता हूँ। तुम सांवरे गोरे बनते हो। यह सांवरा और सुन्दर बनता है। सदा सुन्दर तो एक ही माशुक है। तुम सभी को सुन्दर बनाकर साथ में ले जाते हैं। तो बच्चों को सुन्दर बन फिर दूसरों को सुन्दर बनाना है। बाप तो श्याम सुन्दर बनते नहीं। गीता में भूल कर दी है जो बाप के बदली कृष्ण का नाम डाल दिया है। वही कृष्ण श्यामसुन्दर बनता है। इसको ही कहा जाता है एकजभूल। सारे विश्व को सुन्दर बनाने वाला शिवबाबा उनके बदली जो स्वर्ग में पहला नम्बर शाहज़ादा बनता है उनका नाम डाल दिया है। यह कोई समझते थोड़े ही हैं। भारत फिर सुन्दर बनने का है। वह तो समझते हैं 40000 वर्ष बाद स्वर्ग बनेगा। तुम तो बताते हो कि सारा कल्प ही 5000 वर्ष का है। तो बाप आत्माओं से बात करते हैं। कहते हैं मैं तुम्हारा आधा कल्प का माशुक हूँ। तुम मुझे पुकारते आये हो हे पतित पावन आकर हम आत्माओं आशुक को आकर पावन बनाओ। तो उनको याद करना चाहिए ना। मेहनत करनी चाहिए। बाबा ऐसे नहीं कहते कि तुम श्रृंगार आदि नहीं करो। नहीं। वह सभी कुछ करना है। गृहस्थ व्यवहार में रहते बाल–बच्चों आदि को सम्भालते सिर्फ अपन को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। क्योंकि मैं पतित पावन हूँ। बच्चों की भल सम्भाल भी करो। बाकी और बच्चे अभी पैदा न करो। नहीं तो वह याद आते रहेंगे। इन सभी को होते हुए भूल जाना है। जो कुछ तुम देखते हो यह सभी खत्म होने वाले हैं। शरीर भी खत्म हो जावेंगे। बाप की याद से ही आत्मा पवित्र बन जावेगी। तो फिर शरीर भी नया मिलेगा। यह है बेहद का सन्यास। बाप नया घर बनाते हैं तो फिर पुराने घर से दिल हट जाती है ना। बच्चे कहेंगे बाबा इसमें गेन्डी लगाना, फ्लश लगवाना। यह तो तुम बच्चे जानते हो स्वर्ग में क्या न होगा। अपार सुख है वहाँ। बच्चे ने दिलवाला मंदिर देखा है। मनुष्य समझते हैं स्वर्ग कोई ऊपर में है। बाप समझाते हैं स्वर्ग तो यहाँ होता है। दिलवाला मंदिर भी पूरा यादगार है। नीचे तपस्या कर रहे हैं। फिर स्वर्ग कहाँ दिखावे। तो वह फिर छत में रख दिया है। कारीगरों ने भी समझ कर बनाया होगा ना। नीचे राजयोग की तपस्या कर रहे हैं। और ऊपर राजयोग पद खड़ा है। कितना अच्छा मंदिर है। ऊपर फिर है अचल घर। वहाँ सोने की रखो हैं। उनसे ऊपर फिर है गुरुशिखर। गुरु सभी से ऊपर बैठा है। ऊँच ते ऊँच है सद्गुरु। फिर बीच में दिखाया है स्वर्ग। ऊपर सोना ही सोना। नीचे काला ही काला। उनको स्वर्ग का मालिक बनाने कौन। गुरु शिखर। गाते भी हैं हे पतित पावन आओ। आकर पावन बनाओ। फिर कह देते सर्वव्यापी है। ठिक्कर भित्तर में है। कितने बेसमझ मूर्ख बुद्धि बन सभी पैसे ही खलास कर देते हैं। भारत कंगाल बन पड़ा है ना। भारत पर जितना कर्जा है उतना और कोई पर नहीं। 40–50 वर्ष लिए लेते हैं क्या उनको मिलेगा। यह लेन देन का हिसाब पूरा होता है। तो यह दिलवाला मंदिर तुम्हारा यादगार है। राजयोग तुम सीखते हो फिर स्वर्ग भी यहाँ ही होगा। देवताएँ यहाँ थे ना; परन्तु उनके लिए पावन दुनिया चाहिए। वह अभी बन रही है। अच्छा मीठे2 रूहानी सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

–: शिव बाबा और स्वर्ग की बादशाही याद है :–